डॉ. अन्नपूर्णा श्रीवास्तव

गोलू और चंदा

नटखट गुल्लु दौड़- दौड़ कर
चंदा के संग होड़ लगाए।
जाए जहाँ, गगन में चंदा,
दिखे गर्व से सिर उठाये!
कहा गोलु, बहुरुपिये मामा,
कैसे पहलेआ जाते तुम?
तुझे हराना मैं चाहूँ, पर,
मुझे हराकर मुस्काते तुम!
तेज है कितनी, गति तुम्हारी?
यह बात समझ न आती है।
छोड़ के आंगन छत पै आता,
तिरी सूरत दिख जाती है!
शहर छोड़ गाँव में आता,
वहाँ भी तुम मौजूद मिलो,
करते तय सफर तुम कैसे,
इतनी दूर इतनी मीलों?
कभी - कभी ऐसा होता है,
कहीं न तुम दिख पाते हो,
डरकर मुझसे क्या तुम मामा,
कमरे में छिप जाते हो ?
बोला चंदा गोलू सुन लो,
न जाने तू मेरी माया।
बढता-घटता रहता हूँ मैं,
पड़ती पृथ्वी की छाया।

परिक्रमा करता पृथ्वी की,
निज धुरी पर भी घूमूँ।
सूरज दादा से प्रकाश ले,
दिखूँ और चमकू चमकूँ!
जितना हिस्सा रवि के आगे,
उतना रौशन रहता हूँ।
पृथ्वी से पूरा ढँक जाता,
बिल्कुल मैं नहीं दिखता हूँ!!